International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मून्ड्राम पालिन मुगम और गोमती: एक विश्लेषण

अरुण. पी[1],डॉ. के. जयलक्ष्मी[2]

[1]शोध छात्र, भाषा विभाग, एस. एस. एल, वी. आई. टी, वेल्लोर, तमिलनाडू -632014
[2]सह आचार्या, भाषा विभाग, एस. एस. एल, वी. आई. टी,वेल्लोर, तमिलनाडू-632014

सार:

"ट्रांसजेंडर" का नाम सुनाते हैं तो हमारे मन में एक लज्जा का भाव उठता है। ट्रांसजेंडर के लिए यह भाव ही पहला विस्थापन है। वे समाज के अन्य व्यक्तियों को जल्दी से स्वीकारते हैं और यह आशा करते हैं कि वे भी सामान्य मनुष्य के तरह रहें लेकिन, एक शतक से उनके इस यथार्थ को हम उदासीन कर रहे हैं।

ट्रांसजेंडर पुरुष-से-महिला लिंग को किसी अन्य महिला के बजाय एक अजीब पुरुष के रूप में देखने के लिए जन्में या उस मामले के लिए किसी अन्य इंसान के रूप में जीना चाहते हैं"। उन्हें महिला की श्रेणी में रखा जाता है। वे प्रकृति से महिलाएं नहीं हैं जो प्रजनन करती हैं, लेकिन उनकी स्त्री भावनाएं स्वाभाविक हैं। दुनिया में पश्चिमीकरण के आगमन ने सभी लोगों की जीवन शैली को बदल दिया है और एक नया उदार दृष्टिकोण बना दिया है जिसने संस्कृति और परंपरा में एक नया आयाम जोड़ा है और इसी आयाम ने ट्रांसजेंडरों के प्रति हमारी नज़रियाँ बदल दिया है जो अपने पसंदीदा सितारों की नकल करने के लिए अपनी पोशाक और शैली बदलते हैं। हमारे साथ हमारे समाज में ट्रांसजेंडर लोग हैं जो अपना नाम,नौकरी,धर्म,राजनीतिक दलों से जुड़ाव और यहां तक कि अपनी राष्ट्रीयता भी बदलते हैं ताकि समाज में लोग उन्हें स्वीकारे और सामान्य रूप से उनके साथ पेश आए पर भारत जैसे देश में आज भी उनको वह सम्मान प्राप्त नहीं जैसे अन्य देशों में उन्हें मिलता है।

ये लोग कौन हैं? क्या हम उन्हें इंसान मानते हैं? उपरोक्त सभी के अलावा, हम भारत में पुरुषों की काफी बड़ी संख्या पाते हैं जो खुद महिलाओं के रूप में तैयार होते हैं और भीख मांगते हैं या कभी-कभी हम उन्हें दुकानों में चिल्लाते और झगड़ते हुए,पैसे मांगते हुए देखते हैं। ट्रांस्जेंडरों का एक समूह,विशेष रूप से भारत में,ट्रैफिक सिग्नलों पर संघर्षरत भीख मांगते, चिल्लाते और ताली बजाते हुए और अधिक पैसे मिलने के लिए घूमते हुए दिखाई देते हैं। वे उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं जो उन्हें पैसा देते हैं और जो देने से इनकार करते हैं उन्हें शाप देते हैं।

ट्रांसजेंडर समुदाय के सदस्यों के अनेक आत्म पहंचानीकृत लिंग का निर्धारण करने के अधिकार को भी कायम रखा जाता है और केंद्र सरकार इसी के अनुरूप उनकी लिंगीय पहचान जैसे "पुरुष, स्त्री और तृतीय लिंग" के रूप में कानूनी मान्यता दिए गए हैं। इस प्रपत्र में दो कहानियाँ को लेकर थिरुनंगाई और उनके जीवन का उल्लेख इन के पात्रों के माध्यम से आवाज़ दी गई है। इन दोनों रचनाओं में रमेश और गोमती दोनों ही तृतीय लिंगी पात्र है जो दूसरों से एक ही चीज़ की अपेक्षा करते हैं, कि दूसरे उन्हें स्वीकार करें और प्यार करें। यह दुनिया किसी कारण से इसे देने से इंकार कर देती है। दोनों की मानसिक अवस्था,वेदना,पीड़ा और समाज में सामान्य मनुष्य के रूप में जीने की चाह को प्रस्तुत किया है।

मूल शब्द: थिरुनंगाई, हिजड़ा, तमिल साहित्य में ट्रांसजेंडर, मून्ड्राम पालिन मुगम और गोमती।

भूमिका:

ट्रांसजेंडर अपने जीवन के दौरान जिन प्रतिकूलताओं का सामना करता है उनके संदर्भ में सामाजिक कारकों पर चर्चा की गई है। ट्रांसजेंडर को निकृष्ट भाव में वर्गीकृत किया जाता है और उन्हें पापी के रूप में पहचाना जाता है। निहित सामाजिक, सांस्कृतिक मानदंड तथाकथित सामान्य लोगों की मेजबान समाज की शत्रुता के प्रमुख कारण हैं। समाज ने ट्रांसजेंडर की उपस्थिति को ही दूर कर दिया है और उनके लिए रोज़गार के दरवाजे बंद कर दिए हैं। यह उन्हें गरीबी के चंगुल में धकेल देता है और उनका अस्तित्व एक प्रश्न चिहन बन जाता है। वे एक महिला के रूप में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं। समाज में लड़के और लड़की के बीच एक स्पष्ट सीमांकन होता है और इनके आपसी व्यवहार में कोई भी अस्वाभविका नज़र आए तो विरोध तुरंत किया जाता है। छोटी उम्र से ही बच्चों को सिखाया जाता है कि लड़के या लड़की को कैसा व्यवहार करना चाहिए, चाहे वे भाई - बहन ही क्यों न हो।

साहित्य में ट्रांसजेंडर:

समाज की नज़र में हमें पुरुषों और महिलाओं दोनों के बारे में बहुत सारे आंकड़े और खबरें मिलती हैं। हालाँकि, इन दोनों नस्लों से परे, एक समुदाय है जिसे ट्रांसजेंडर कहा जाता है। ट्रांसजेंडर के रीति-रिवाजों, भाषा और भावनाओं पर ज़्या दा ध्यान नहीं दिया गया है। अफसोस की बात है कि अभी तक उनके बारे में पूरी बात सही समझ के साथ नहीं बताया गया है। तमिल साहित्य में ट्रांसजेंडरों का उल्लेख लंबे समय से दर्ज किया गया है और ट्रांसजेंडर को एक समाज के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। पुराणों, वेदों, ऐतिहासिक ग्रंथो के साथ वर्तमान साहित्य में हमें से लेकर आज की युग में ट्रांसजेंडरो का उल्लेख मिलता है।

"आन एनथोंड्री "अली" ऐनपेयरंदु"[1]
थिरुवासगम थिरुवम्बावै - 8

व्याख्या:

ट्रांसजेंडर वे होते हैं जो पुरुष पैदा होते हैं और खुद को बदलकर महिला बन जाते हैं। तमिल साहित्य में सब से पहले "अली" शब्द से ट्रांसजेंडर को थिरुवासगम उल्लेख करती है।

"आनमिगिल आनागुम पेनमिकिर पेणणाडुम पूणिरेनदेतत्तु पोरुन्दिल अलीयागुम"[2]
(थिरुमंदिरम - 478)

व्याख्या: तमिल साहित्यिक ग्रंथों में बताया गया है कि तमिल संस्कृति में ट्रांसजेंडरों को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है और ट्रांसजेंडर कैसे जन्म लेते हैं, उनका स्वभाव क्या होगा और ट्रांसजेंडर को कैसे बुलाया जाए इसे "थिरुमंदिरम" बताती है।

रामायण और महाभारत में भी इनका वर्णन किया गया है। रामायण के अनुसार राम और सीता के वनगमन के अवसर पर अयोध्या वासियों के साथ ट्रांसजेंडर भी विदा करने आये थे। श्रीराम ने सभी नर-नारियों से अयोध्या लौट जाने को कहा परन्तु किन्नरों का संबोधन नहीं किया इसी कारण से राम के आपने राजधानी पुनः वापसी आने तक ट्रांसजेंडर लोग अयोध्या की सीमा पर श्रीराम की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन लोगों की भक्ति और निष्ठा से खुश होकर श्रीराम ने उन्हें आशीष दिया था की उनका कभी अनुष्ट नहीं होगा जिन्हें वे आशीर्वाद देंगे।

"पुरुष नपुंसक नारी वा, जीव चराचर कोई
सर्व भाव नाज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोई"[3]
रामचरितमानस, (उत्तर कांड 87 - क)

प्रभु द्वारा उनके वहाँ रुकने का कारण पूछने पर इन शुद्ध मानस ट्रांसजेंडरों ने बताया कि जब हम भरत के साथ यहाँ आप को मनाने हेतु आये थे तो आमने श्रीराम ने कहा:

"जथा जोगु करि विनय प्रनाय विदा किए सब सानुज रामा।
नारि पुरुष मद्य बड़ेरे सब सनमानी कृपनिधि फेरे"11[4]
रामचरितमानस, (उत्तर कांड 398/4)

इन पंक्तियों से वह स्पष्ट हो जाता है कि रामायण में श्री राम के वनवास के सन्दर्भ में ट्रांसजेंडरों का उल्लेख मिलता है। विभिन्न कालों में ट्रांसजेंडर का उच्च पदों पर नियुक्ति का प्रमाण मिलता है। प्राचीन काल में ट्रांसजेंडर समुदाय शासन के कई महत्वपूर्ण कार्यो में भाग लेते थे। इसका एक उदाहरण हमें महाभारत में भी किन्नरों के प्रसंग हम मिल जाता है। जब अर्जुन स्वर्ग में संगीत और नृत्य की

शिक्षा में रहे थे, तब उर्वशी अर्जुन पर मोहित होकर उनसे प्रणय निवेदन करती है लेकिन, करु वंश की जननी होने के कारण अर्जुन उन्हें अपनी माता मानते हैं। इससे क्रोधित उर्वशी उन्हें नपुंसक बनने का श्राप देती है। इंद्र ने इस श्राप को एक साल तक का करके अर्जुन से बताया की यह श्राप अज्ञातवास में वरदान का काम करेगा और अज्ञात्वास के दौरान अर्जुन वृहनल्ला के नाम से राजा विराट के महल में नृत्य कला का शिक्षा दिया था। इसके अलावा शिखंडी भी एक ट्रांसजेंडर हैं जो पंचाल के राजा द्रुपद के पुत्र और धृष्टघुम्न एवं द्रौपदी के भाई थे। इसके अलावा अर्जुन और नाग कन्या उलुपी के पुत्र "इरावन" का भी उल्लेख हुआ है। महाभारत युद्ध में नर बलि बनते हैं और इसके बाद ट्रांसजेंडेर के आराध्य माने जाते हैं।

महाभारत के अनुसार अर्जुन और नाग कन्या के पुत्र "इरावन" कौरव और पांडव के युद्ध में कौरवों के जीत के लिए अपने को नर बलि के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता है। उनका शर्त था कि वे एक दिन के लिए विवाहित जीवन जीने चाहते हैं। तब श्री कृष्ण मोहिनी का रूप धारणकर एक रात के लिए इरावन से शादी करते हैं। और दूसरे दिन इरावन की बलि के बाद मोहनी इरावन के मृत शरीर के पास बैठकर विलाप भी करती हैं। इसलिए ट्रांसजेंडर समुदाय उन्हें देवता इरावन के रूप में पूजा करते हैं। आजकल तमिलनाडु में कूवागम गाँव में इरावन देवता की बलि के सन्दर्भ में त्यौहार मनाया जाता है।

बाइबिल में येसु निम्नलिखित मत्ती -19:12 और यशायाह 56:3 अधिकारों से ट्रांसजेंडरों के बारे में ऐसा कहते हैं कि “उनकी प्रार्थना में अनन्त जीवन है। मैं दूसरों से ट्रांसजेंडर को महिमा दूंगा”।

"जो परदेशी यहोवा से मिल गए हैं वे न कहें कि यहोवा हमें अपने प्रजा से निश्चय अलग करेगा
और खोजे भी न कहें कि हम तो सूखे वृक्ष हैं"[5]

(यशायाह 56:3)

"क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे और कुछ नंपुसक ऐसे हैं जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया और कुछ नपुंसक ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आप को नपुंसक बनाया है जो इस को ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे"[6]

(मत्ती- 19:12)

अजमेर में रहने वाले एक मुस्लिम बाबा के लिए एक ट्रांसजेंडर काम-काज कर रही थी। वह ट्रांसजेंडर दिन-रात उसकी देखभाल में अपना समय बिताती थी। उन्होंने कहा, "जब बाबा निकट हैं, तो आपने मेरे लिए ऐसे कार्य किए हैं जो उस जगह/ उसका स्थान कोई नहीं कर ले सका। मैं मृत्यु के निकट में आखिरी साँस गिन रहा हूँ, इसलिए मुझसे पूछें कि आपको क्या चाहिए और मैं इसे करूंगा"। "मैं ट्रांसजेंडर थी और एक महिला के रूप में रहना चाहती थी"। उस ट्रांसजेंडर ने मुस्लिम बाबा से अपने गर्भवती होने का वर माँगा। बाबा के आशीर्वाद से ट्रांसजेंडर गर्भवती हो गई। नौ महीने बीत गए। वह

ट्रांसजेंडर ने गर्भवती होने का वरदान तो मांगा, लेकिन बच्चा पैदा करने का वरदान नहीं मांगा। इसलिए, दसवें महीने में पेट फटने से माँ और बच्चे की मृत्यु हो गई। उनकी कब्रें आज भी अजमेर मगई के अंदर पहाड़ी गुफा में है।

ट्रांसजेंडरों के बारे में कई साहित्य में अनेक संवेदना,अंतरद्वंद और उनके चिंता के विषय पर कई व्यक्तियों ने लिखा है। विभिन्न भाषाओं में इन के लिए "हिजड़ा, छक्का, कोती, अरावनी, नंपुसकी" आदि नामों से अभिहित किया गया है। पुरुष के रूप में पैदा होकर महिला के रूप में बदलने वालें को संस्कृत में "शंदा" शब्द से अभिहित किया जाता है। तमिल बाइबिल में ट्रांसजेंडर को "अण्णगर" का नाम से उल्लेख किया है। तमिल में ट्रांसजेंडर को "थिरुनंगाई" कहते हैं जिसका अर्थ "ईश्वर की बेटी" है।

तमिल में ट्रांसजेंडेरों का नामकरण:

1994 में अमर "सु. समुत्तिरम" अपने प्रथम हिजड़ा उपन्यास "वाडामल्ली" में "अली" नाम का प्रयोग किया था। 1997 में विल्लुपुरम के सहायक निरीक्षक एम. रवि ने "मिस कूवागम" प्रतियोगिता में भाग लिया। वहाँ उन्होंने कहा "अरावन" से शादी करने वाली इसलिए मैं घोषणा करता हूँ कि अब से आप "अरावनी" नाम से जाने जाएंगे। तब से पत्रिकाओं और सामान्य लोग तमिलनाडु में "अरावनी" नाम से ट्रांसजेंडर का उल्लेख करते हैं।

नर्तकी नटराज भारत के अग्रणी भरतनाट्य कलाकार है जिन्होंने पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त किया। वे साहित्य में शोध कर ट्रांसजेंडर लोगों के लिए एक सम्मानित नाम के रूप में तमिलनाडु सरकार को "थिरुनंगाई" नाम सुझाया जिसका अर्थ है "सम्मानित महिला"। 2009 में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री डॉ. एम. करुणानिधि ने अपने शासन में अधिकारपूर्व से "थिरुनंगाई" का नाम से ट्रांसजेंडर की पहचान भरपाई रूप में की हैं।

मूल रचना:

"मून्ड्राम पालिन मुगम" (2008) की लेखिका प्रिया बाबू एक ट्रांसजेंडर है। यह उपन्यास ही तमिल साहित्य में एक ट्रांसजेंडर द्वारा ट्रांसजेंडर पर लिखा हुआ प्रथम स्वतंत्र उपन्यास है। प्रिया बाबू ट्रांसजेंडर समुदाय की एक प्रमुख व्यक्तित्व है। अपने समुदाय के प्रति उनका योगदान बहुत बड़ा है। उन्होंने एक अदालत का फैसला जीता और ट्रांससेक्सुअल को अब उसके प्रयासों के कारण मतदान का अधिकार मिला है। प्रिया बाबू मूल रूप से श्रीलंकाई तमिल हैं। वे 1978 में भारत आई। उन्होंने यहां तमिलनाडु में ट्रांससेक्सुअल के उत्थान की आवश्यकता महसूस की। वे तमिलनाडु में ट्रांसजेंडर लोक कला के बारे में शोध करने वाली पहली ट्रांसजेंडर व्यक्तियों में से एक हैं, जो अरवानी समुदाय के अधिकारों की वकालत

करने में शामिल रही हैं और वे एक शोध साथी हैं जो अरवानी समुदाय से संबंधित कई शोध परियोजनाओं पर काम करती हैं। वे सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक और वृत्तचित्र निर्देशिक भी हैं। वे अब मदुरै की निवासी है।

"की. राजनारायणन" तमिल साहित्य में लोकप्रिय हैं। तमिलनाडु में कोविलपट्टी के एक भारतीय तमिल भाषा के लोकगीतकार और विख्यात लेखक थे। वे 1991 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़े गए थे।

मूंड्राम पालिन मुकम:

रमेश इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। रमेश के परिवार में माता-पिता के तीसरे पुत्र के रूप में रमेश का जन्म हुआ। रमेश कॉलेज में पढ़ रहा है। उसके स्कूल के दिनों से जब कभी भी घर में कोई नहीं होता उस समय वह खुद को एक महिला के रूप में तैयार होता है। एक दिन, सजने- संवरने का आनंद लेते हुए, उसकी माँ की नज़र रमेश पर पड़ जाती है। उसकी माँ को रमेश की कोई भी हरकत पसंद नहीं है। रमेश के पड़ोसियों उसकी माँ से कहते हैं कि रमेश एक महिला की तरह व्यवहार कर रहा है और वह लड़की की तरह बोलने लगता है। रमेश की माँ जब एक दिन ट्रांसजेंडरों को सड़कों पर भीख मांगते हुए देखती हैं तो अपने मन में सोचती हैं कि "हमारे बच्चे ऐसा नहीं होना चाहिए"। जब उसकी माँ उससे पूछती हैं तो वह पहले मना कर देता है और फिर अपनी असली स्त्रीत्व प्रकट करता है। रमेश लड़की बनना चाहता है पर पढ़ाई पर ध्यान देता है। वह अक्सर कुछ ट्रांसजेंडरों को मिलता है और उनके अनुभव सुनता है। जानकी नाम की एक ट्रांसजेंडर रमेश को अपनी बेटी के रूप में गले लगाती है और रमेश के साथ बहुत प्यार और सम्मान से पेश आती है। रमेश ने ट्रांसजेंडर के साथ "कूवागम कूत्थांडवर त्योहार" (यह त्यौहार इरावन "कूत्थांडवर" को समर्पित कूत्थांडवर मंदिर में होता है। प्रतिभागियों भगवान कूत्थांडवर से विवाह करती है इस प्रकार भगवान विष्णु/कृष्ण के प्राचीन इतिहास को दोहराया जाता है जिन्होंने मोहिनी का रूप लेने के बाद उनसे विवाह किया था। अगले दिन, वे अनुष्ठानिक नृत्यों के माध्यम से और अपनी चूड़ियाँ तोड़कर भगवान कूत्थांडवर की मृत्यु पर शोक मनाते हैं। वार्षिक सौंदर्य प्रतियोगिता और गायन प्रतियोगिता जैसी कई अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं) में भाग लिया। इसके बाद उसने अपनी स्त्रीत्व को बढ़ाने के लिए हार्मोनल इंजेक्शन का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। अपनी माँ और एक समूह सेवकी कणमणि की मदद से, वह एक अस्पताल में पुरुष से महिला में बदलने के लिए एक ऑपरेशन करवाता है। इसके कारण उसके घर में बहुत विरोध होता है। रमेश के पिता को उसका ट्रांसजेंडर ऑपरेशन पसंद नहीं है तो उन्होंने रमेश को ज़ोर ज़ोर से पीटते हुए कहा कि "तुम मेरे बेटे नहीं हो। कभी

भी इस घर में प्रवेश न करो"। इस उपन्यास का मूल कथ्य यह है कि रमेश स्वयं को और अपने ट्रांसजेंडर समुदाय को स्वाभिमान के साथ बदलने का प्रयास करता है।

कई बार रमेश अपने भाई के मित्रों से अपमानित होता है। रमेश को देखते ही वे ताली बजाकर कहते हैं "अरे! रमेश को देखो! वह महिला के तरह चलता है"(मू. पा.मु-38) जब यह सुनता है तो रमेश को गुस्से आता है पर शांत होकर वहाँ से भाग जाता है।

रमेश की अद्यापक भी रमेश की भाव देखकर उसके कान पकड़ते हैं और उसे फर्श पर घुटने टकने के लिए कहते हैं। उसके बाद वे रमेश को पीट-पीट के मारते हैं। तब रमेश छोटा था। तभी उसे यह बात पता नहीं था कि उसके साथ ऐसा बरताव क्यों हो रहा है। धीरे धीरे जब वह बड़ा हुआ, तब रमेश को समझ आया "मैं दिल से महिला हूँ"। समय समय रमेश ट्रांसजेंडर के घर जा रहा था। रमेश सीधे रेलवे लाइन के किनारे झोपड़ी में रहने वाले एक हिजड़े के पास गया। कोई दीवार नहीं, इसके बजाय वे रेलवे की बाड़ से बंधे हैं, जिस पर निवासियों ने अपने घर के अंदर की छाया को बंद करने के लिए बोरी, बड़ी चादरें और स्क्रीन फेंक दी थी। उसका दिल डूब गया जब उसे एहसास हुआ कि वहाँ रहने का क्या मतलब होगा। वहाँ रहकर अपने जीवन के समस्याएँ और उनके वेदनाओं की व्यथा को समझ गया। और वे लोग भी उसका खुशी से स्वागत करते हैं। समाज में लोगों के मध्य रहकर भी बाकि कुल से अलग एकांत जीवन जीने को मजबूर होते हैं ट्रांसजेंडेर। रमेश ट्रांसजेंडरों से मिलकर एक चीज़ समझता है कि "मुझे क्यों यह दण्ड मिल रहा है? यह पीड़ा कोई ट्रांसजेंडर ही समझ सकता है कोई और कभी भी समझ नहीं सकता। हिजड़ो को शिक्षा देना और नौकरी देना के लिए कोई भी आगे नहीं आएगा। अकेले कपड़े इकट्ठा करना महत्वपूर्ण नहीं था, लेकिन सही समय और स्थान ढूंढना भी उतना ही महत्वपूर्ण था, तभी उसे किसी के काम में नहीं लिया जाएगा।

रमेश की माता उसे समझती हैं और उसके लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं। रमेश अपनी माँ से दिलसे कहता है, “माँ मैं महिला बनना चाहता हूँ। अब मैं आदमी नहीं हो सकता। मेरी पूरी ज़िन्दगी झूठ है। मैं मेरी ज़िन्दगी में महिला के रूप में रहना चाहता हूँ”(मू.पा.मु-98)। रमेश इसे कहते समय उसके गोद पर मुँह रखकर रोने लगा। पार्वती कहती है ‘’महिला के रूप में बदलना समाज में विरोध से कार्य नहीं लेकिन, हमारे परिवार में क्या बताएंगे? हमारे वंश का क्या होगा?”(मू.पा.मु-99)।

ट्रांसजेंडर महिलाएं न केवल सुर्खियों में आने के लिए बल्कि अपने समुदाय में 'प्रकाश' लाने के लिए अपने संघर्षों पर चर्चा करती हैं जो मानव अस्तित्व के सबसे अंधेरे पक्ष में हैं। रमेश कहता है, "मैं रोई थी क्योंकि कार्यक्रम बेहतरीन था और अगर सभी ने इसे देखा तो अज्ञानता और पूर्वाग्रह कम और समझ ज्यादा होगी"(मू.पा.मु-86)। इस समझ की कमी के कारण वे खुद को बाकी दुनिया से अलग कर लेते हैं। इसलिए, वे आराम के लिए अपना समय अपने प्रकार के लोगों के साथ बिताना पसंद करते हैं।

रमेश को अपने जैसे लोगों से जो आशा मिलती है, उसे इन पंक्तियों के माध्यम से बखूबी समझाया गया है। "यदि आप हिजड़ा और गरीब क्षेत्र में हैं, तो आपको दुर्व्यवहार और अपमानित होने की उम्मीद करनी चाहिए, यह सबसे अच्छा है कि मैं अपने जैसे अन्य लोगों के साथ रहूं, केवल इससे मेरी गरिमा सुनिश्चित होगी"(मू-पा-मु-107)।

छवि का प्रतीकात्मक संदर्भ जो आईने में प्रतिबिंबित होता है वह रमेश देता है। उसकी कथा शैली की व्याख्या करता है "दर्पण आपके और आपके जैसे अन्य लोगों के लिए आपकी बाहरी उपस्थिति को प्रतिबिंबित कर सकता है लेकिन थिरुनंगाईयों के मामले में यह उनकी अंतरतम भावनाओं और अशांति, उनकी आवश्यक स्त्रीत्व को दर्शाता है, सभी को प्रदर्शित करता है"(मू.पा.मु-99)। "क्यों, एक अपंग व्यक्ति, एक अंधा व्यक्ति - यहां तक कि वे भी दया को आकर्षित करते हैं और लोग उनकी मदद करते हैं। अगर किसी को शारीरिक चोट लगी है, तो उसकी देखभाल परिवार और बाहरी लोगों द्वारा की जाती है, जिन्हें इसका पता चलता है लेकिन हमें इंसान नहीं माना जाता है"(मू-पा-मु-84)।

कणमणि एक एन.जी.ओ में समूह सेवकी की काम करती है। उसे बुलाकर पार्वती रमेश के बारे में बात करती है। तब कणमणि कहती है “समाज में ट्रांसजेंडरों के सम्मुख आनेवाली समस्याओं का समाधान उन्हें हिजड़ा के रूप में देखने का कारण है। ट्रांसजेंडर मानसिक रूप से गरिमापूर्ण जीवन जीने का प्रयास करते हैं। अपनाना के लिए कोई सामने आते नहीं हैं। आज उनकी स्थिति को दयनीय नज़र से देखा जाता है”(मू.पा.मु-53)। वे उस शर्म से डरते हैं जब वे जीने में सक्षम नहीं होंगे समाज द्वारा निर्धारित नियमों द्वारा कणमणि की बातों के बारे में पार्वती थोड़ी सोच रही थी। कुछ दिनों के बाद पार्वती ने रमेश से कहा "तू ऐसा पैदा हुआ इसके लिए मैं भी जिम्मेदार हूँ"(मू.पा.मु-100)। लम्बी साँस लेकर रमेश से कहा: "तुम जैसे एक स्त्री के पति नहीं हो सकता। विवाह कर नहीं सकता और बच्चें पैदा नहीं कर सकता। क्यों महिला बनना चाहते हो? रमेश ने उत्तर दिया कि "मैं दोहरा जीवन नहीं जी सकता"(मू.पा.मु-100)। रमेश अपने उत्तर से हमारी समाज का मन को चूर-चूर कर देता है। रमेश के वाक्य में ट्रांसजेंडर वर्ग की अंतरद्वंद और उनके दुःखी अभिव्यक्ति हुई है।

रमेश की माता उसे स्वीकार करने के बाद रमेश की महिला रूप में देखकर अप्रसन्न भी हुई। उसका "भारती" नाम रखा दी। भारती के अँधेरे जीवन में उसकी माता के हाथों से रोशनी मिल गयी। जब भारती महिला बनकर अपने परिवार से मिलने आया था तो उसके पिता और भाई ने एक साथ मिलकर भारती को मारा। जब उन्होंने भारती को "रमेश" कहा उसे वह नाम अज़ीब लगा और कहा "मुझे ऐसे मत बुलाओ। अब मैं भारती हूँ”(मू.पा.मु-106)।

रमेश समाज में तृतीय लिंग को भी शामिल करने की आवश्यकता व्यक्त करता हैं कि "मेरा थिरुनंगाई होना स्वाभाविक था, जैसे पुरुष पुरुष हैं, महिलाएं महिलाएं हैं, हमें सभी की ज़रूरत है। हमें बस

काम करने और आजीविका कमाने का समान अवसर चाहिए"(मू.पा.मु-107)। काम करने और आजीविका कमाने का अवसर जहां वह अपने जीवन में सामना की गई पचास गलतफहमियों को सूचीबद्ध करती है। मुझे अरावनी के रूप में जन्म लेने के लिए कोसा गया और मुझे दुखी, चिंता और आँसू के साथ घर छोड़ ना पड़ा। मैंने सोचा कि मैं शापित था पर बाद में भगवान ने उसे एहसास कराया है कि इसे समाज में कुछ हासिल करने के लिए उसका जन्म हुआ।

गोमती:

गोमती कहानी में गोमती एक ट्रांसजेंडर है। आसपास रहनेवाली महिलाएं गोमती को गलत भावना से देखते नहीं। समान रूप से अपने पास रखते हैं। लेकिन गोमती अपना जीवन के शुभकामनाओं से दूर रहा था। उसका गाँव के ज़मीनदार के हवेली में नौकरानी के रूप में काम कर रहा है। वहाँ रघुपति नायकर का पुत्र रघु को देखकर उनसे प्यार करने लगी थी। रघु ने गोमती को देखकर उसके प्यार को मना कर दिया है। रात को रघु अपने कमरे में बैठकर लिख रहा था तो गोमती कमरे के पास आई। उस समय रघु के लिए दूध लाती है। रघु से गोमती ने प्यार से कहा कि: "इसे पियो" रघु को इसे सुनने बाद गुस्सा आकर अपने कलम फेंकर गोमती को मारा (गोमती-7) गोमती दरवाज़ बंदकर पूरा रात रोती है। रघु को गोमती का कुछ भी पसंद नहीं है लेकिन, गोमती रघु से इतना प्यार करती है कि वह बड़े प्यार से उसका ख्याल रखती है गोमती खाना पकाने में अच्छी है इसलिए वह रघु के लिए उसकी पसंद के अनुसार बहुत सारे व्यंजन बनाती है और उसे चकित कर देती है। जब वह नहा रहा होता है तो अपनी पीठ रगड़ने के लिए कहता है और उसके साथ बिताया हर मिनट वह अपनी स्त्रीत्व को महसूस करता है और खुश होता है।

दूसरे दिन जब रघु शहर जाने के लिए तैयार हो रहा था तो कमरे के पास आई तो उसे प्यार से बुलाया। गोमती को एक डिब्बा दिया। उस डिब्बा में बिंदी और गुलाब का फूल था। उसे देखकर आस पास रहने वाली पूरी महिलाएं खुश होकर हँसे। गोमती भी उसे देखते अपने आँखों में आँसू भरकर हँसी। उस दिन से धोती और कमीज़ पहनना छोड़कर साड़ी पहना शुरू किया। रघु मुझे एक महिला के रूप में सोचता है और मुझे प्यार करने लगता है जब मैं एक पुरुष के अंदर अपनी स्त्रीत्व को मंचित करने की कोशिश करता हूँ। गोमती हिचकिचाता है। रघु तो कहता है कि साबित करो कि तुम एक लड़की हो और मैं तुमसे शादी कर लूंगा लेकिन, मैं वहां उन लोगों से कैसे सच बता सकता हूँ कि मैं लड़की नहीं हूँ।

ट्रांसजेंडर समाज उसके जैसे लोगों के शादी के लिए इतनी आसानी से स्वीकार नहीं करता है क्योंकि पुरुष शादी के नाम पर ट्रांसजेंडर को धोखा देते रहते हैं इसलिए युवा ट्रांसजेंडर विवाहित जीवन में शामिल नहीं होना चाहते हैं और नए बदलनेवाले ट्रांसजेंडर विवाह पसंद नहीं करते हैं। इसलिए 95% लोगों

विवाह कानून द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं विवाहित जीवन को स्वीकार करने वाले ट्रांसजेंडर गुप्त रूप से विवाह करते हैं और गुप्त रूप से रहते हैं। गोमती की बात से हमारे सामने यह सवाल उठाते है "क्या न्याय का कागज प्रेम की श्रेष्ठता की पुष्टि करता है?" गोमती द्वारा किन्नरों की इच्छाओं और प्रेम को समुदाय के सामने लाने को प्रयास किया है। इसी तरह की भावनाओं वाले अन्य लोग भी हैं। हालाँकि इस तरह के सवाल शुरू में उठते हैं, लेकिन बाद में उनमें आत्मविश्वास पैदा हो जाता है और वे सुनिश्चित हो जाते हैं कि वे जीवन में क्या बनना चाहते हैं। इन दोनों उपन्यासों में भारती और गोमती के द्वारा ट्रांसजेंडर की विस्थापन और उनके स्थिति समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया गया है।

निष्कर्ष:

हालांकि ट्रांसजेंडर के पक्ष में कई कानून पारित किए गए हैं, लेकिन वे सिर्फ कागजों पर लिखे गए पत्र हैं जिसने अभी तक दिन की रोशनी नहीं देखी है। कड़वी सच्चाई यह है कि यह परिधि में हैं, जबकि आधिकारिक अनुसार उन्हें कुछ सुविधाएं दी जाती हैं। तमिलनाडु में साल 2015 में एक बदलाव लाया गया समावेशन का अर्थ केवल आवेदन प्रपत्रों में श्रेणी लिखना नहीं है उनके लिए लंबे समय तक जीवित रहने के प्रावधानों को सुनिश्चित करना होगा। यह मुख्य रूप से मेजबान समाज की 'लापरवाही' के कारण नहीं हुआ है। ट्रांसजेंडरवाद वास्तव में क्या है, इसके बारे में 'अज्ञान' मेजबान ने समाज के दिमाग को विकृत कर दिया है और उन्हें मुख्यधारा में ट्रांसजेंडरों को स्वीकार करने या शामिल करने से रोक दिया है। "भगवान ने हमें इस तरह से बनाया है, मैंने सोचा, और हमारे पास अपना कोई काम नहीं है, हमारे माता पिता हमें नहीं समझते हैं और यह दुनिया हमें घृणा से देखती है। फिर भी हम भूखे सो जाते हैं। सबसे बढ़कर, हम इंसानों की तरह, गरिमा के साथ जीना चाहते थे"(मू. पा.मु-99)

संदर्भ ग्रन्थ सूचि:

1. की. राजनारायणन, गोमती, किलक्कु पुब्लिकेशन, चेन्नई, 2007
2. प्रिया बाबू - मून्ड्राम पालीन मुगम, संध्या पब्लिकेशन, चेन्नई, 2008
3. थिरुवासगम - थिरुवम्बावै
4. थिरुमंदिरम
5. रामचरितमानस
6. महाभारत
7. बाइबिल